International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारतीय चित्रकला के षडंग का समकालीन कला से संबंध पर अध्ययन

चंदन पांडुरंग डेकाटे

सहायक प्राध्यापक (फाइन आर्ट), सेंट थॉमस कॉलेज, भिलाई, दुर्ग, छत्तीसगढ़ - 490006

सारांश

षडंग अर्थात भारतीय चित्रकला के छह अंग, जिसमे चित्रकला संबंधित सिद्धांत एवं इसमें चित्रकला बनाने की संपूर्ण प्रक्रिया वर्णित है। साथ ही साथ रेखा, रूप और रंगों की अलग अलग रंग संगति का संपूर्ण ज्ञान इस शोध में बताया गया है। व्यंजन के स्वाद की तरह कला में रस एवं लय का महत्व लिखा गया है। जिससे कलाकृतियाँ अधिक रोचक हो जाती है। षडंग जिसे चित्रकला का आधार कहते है इसका वर्तमान में समकालीन कला से तुलना करते हुए आज की कला पर क्या प्रभाव पड़ा है, इसपर अध्ययन किया गया है। षडंग केवल चित्रकला का सिद्धांत नहीं बल्कि चित्रकला को खूबसूरत एवं प्रभावी बनाने का माध्यम है। इसका वर्णन केवल प्राचीन इतिहास में ही नहीं बल्कि समकालीन कला में भी इसका नियमित रूप से पालन दिखाई देता है। आज की पीढ़ी के उभरते कलाकार विद्यार्थियों को भी ज्ञात हो की प्राचीन सभ्यता के महत्वपूर्ण साहित्यों का समसामयिक कला में विशेष योगदान रहा है। जिन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकता।

कूटशब्द: षडंग, चित्रकला, समकालीन कला, भारतीय चित्रकला

प्रस्तावना

कला अर्थात् कौशल निर्मित सौंदर्य जिसे देखकर मन प्रफुल्लित हो उठे। कला और जीवन एक दूसरे के सहायक है। जीवन में कला का होना अत्यंत महत्वपूर्ण है, इसी प्रकार कला के बिना जीवन संभव नहीं है। प्रातः उठने से रात को सोने तक दिनचर्या की प्रत्येक क्रिया में कला है। प्राचीन ग्रंथों में कला का वर्गीकरण है, जिसमें उच्च एवं निम्न स्तर की कलाओं के संबंध में लिखा गया है। निम्न स्तर की कला अर्थात जीवन की उपयोगिता एवं भारी मात्रा में कला वस्तुओं के निर्माण को महत्व देना है। यह व्यवसाय और जीवन की आवश्यकताओं से संबंधित है। तथा उच्च स्तर की कला का तात्पर्य ललित कला से है जिनमे चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला, संगीत, नाट्य, और नृत्य कला शामिल है। जिसमें कला की अवधारणा, रचनात्मकता, कला के गुणधर्म एवं सौंदर्य का आभास होता है। चित्रकार अपनी कलाकृति बनाते समय विशेष नियमों का पालन करते है तब जाकर एक उत्कृष्ट कलाकृति का निर्माण होता है। पूरे

विश्व में कलाकृतियां बनाने के लिए अनेक प्रक्रिया एवं सिद्धांत बनाए गए है, उनमे भारतीय चित्रकला का षडंग चित्रकला बनाने का मुख्य आधार है, इसमें चित्रकला बनाने के नियम एवं विधि बतायी गयी है। तथा प्राचीन षडंग की उत्पत्ति से समकालीन कला या वर्तमान समय तक की कलाकृतियों में महत्व कभी कम नहीं हुआ है। आधुनिकता को ध्यान में रखते हुए चित्रकला के षडंग का उपयोग कर कलाकृतियों को अधिक आकर्षक बनाने का प्रयास रहा है।

भारतीय चित्रकला का षडंग

भारतीय कला का इतिहास अत्यंत पुराना है। इतिहास में जितनी भी कलाकृतियां बनी है, इनमें षडंग इस सिद्धांत का अनिवार्य रूप से पालन किया गया है। प्राचीन समय में भले ही इसका उल्लेख न हो, परन्तु कलाकृतियों में इसका प्रतिबिम्ब अवश्य नज़र आता है। षडंग शब्द में इसका अर्थ छिपा है, जैसे छह और अंग मिलकर षडंग बना है, जो चित्रकला को उत्कृष्ट बनाने में ये छह अंग सहायक होते है। प्रागैतिहासिक कालीन गुफा चित्र से लेकर आज की समसामयिक रचनाओं तक, इस पूरे ऐतिहासिक दौर में कलाकृतियों के सौंदर्य में चित्रकला के षडंग की विशेष भूमिका रही है। गुप्तकालीन कला, अजंता की गुफाओं में भित्ति चित्र, राजा रवि वर्मा की कलाकृतियां या आज के कला जगत के लोकप्रिय कलाकारों की मनमोहक कला को हम बखूबी जानते है। विविध रूप, अनुपात, भाव, अनुग्रह और रंगों का यह खेल निराला है और इसे समझना साधारण मनुष्य के लिए कठिन है। यह एक ऐसा ज्ञान है जो कभी भी जबरदस्ती नहीं दिया जा सकता, जो एक बालक की भांति अपने आप ही समाहित होते रहता है। पहली शताब्दी ईसा पूर्व में "षडंग" या भारतीय चित्रकला के छः अंगों का विकास हुआ, जो आज भी कला के प्रमुख सिद्धांत है। ये सिद्धांत इतने ठोस थे कि वात्स्यायन के कामसूत्र में भी इसका वर्णन मिलता है। इन्होंने कामसूत्र में इन छह अंगों का स्पष्टीकरण दिया है। यशोधर पंडित ने कामसूत्र के प्रथम खंड के तीसरे अध्याय पर टिप्पणी करते हुए चित्रकला के छह अंगों का वर्णन किया है। ये मूल सिद्धांत है जिसके द्वारा भारतीय कलाकारों को सदियों से मार्गदर्शन प्राप्त होते आया है।

रूपभेदः प्रमाणानि भावलावण्ययोजनम ।
सादृश्यं वर्णिकाभंग इति चित्रं षडंगकम् ॥

इस संस्कृत श्लोक में चित्रकला के छह अंग समाहित है।

चित्रकला के छह अंग इस प्रकार से है:

(१) रूपभेदः

विभिन्न रूपों में अंतर करना और उनका अनुभव करना। रूप को सुन्दर आकार और रंग देकर उसमें गहराई, लम्बाई और चौड़ाई दर्शाई जाती है। छाया और प्रकाश का उचित संयोजन करके रूप को अधिक आकर्षक बनाया जाता है। वास्तविक, सृजनात्मक, अमूर्त आदि रूप चित्रकला में सहायक होते हैं। सतह पर सुन्दर रचना के लिए मन में विषय का चयन करने के बाद सबसे पहले विभिन्न रूपों और आकारों की कल्पना आती है। जिससे सुन्दर चित्रकला की शुरुआत होती है। चित्रकला में यह भाग रूपों के समुचित स्पष्टीकरण पर आधारित है।

(२) प्रमाण:

प्रमाण का अर्थ है अनुपात या उचित माप। पेंटिंग में इसका इस्तेमाल दो तरह से किया जाता है। पहला वास्तविक अनुपात जो आकार में सामान्य होता है और दूसरा मानसिक अनुपात जो हमारे मन में किसी महान व्यक्ति या भगवान की महान छवि बनाता है। जो आकार में सामान्य से बड़ा होता है। यथार्थवादी और लयबद्ध रचनाएँ बनाने के लिए सटीक अनुपात महत्वपूर्ण हैं। एक पेंटिंग में सामंजस्यपूर्ण संतुलन बनाए रखने के लिए, विभिन्न तत्वों में सही अनुपात होना आवश्यक है।

(३) भाव:

भाव का तात्पर्य भावनात्मक अभिव्यक्ति से है। यह अंग प्रेम, क्रोध, चिंता, आनंद, लज्जा आदि भावनाओं को सांकेतिक भाषा में प्रस्तुत करता है। यह चेहरे का भाव, मनोदशा एवं शारीरिक भाषा को प्रकट करने हेतु ज़ोर देता है। चित्रकला में भावनाओं एवं कला अभिव्यक्ति को दर्शाने में यह सहायक है। विविध आकार, रूप एवं रंगो द्वारा कलाकार कलाकृतियों में वास्तविक भावनाओं का निर्माण करते है। भावनात्मक अभिव्यक्ति से कलाकृतियों में आकर्षण की वृद्धि होती है तथा कलाकृति देखकर दर्शकों के मन में भी भावनाएं प्रवाहित होती है।

(४) लावण्य योजना:

लावण्यपूर्ण कलाकृतियां सौंदर्य, लय, स्वाद, सार और लालित्य से भरपूर होती हैं। यह कलाकृतियों का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। यह सौन्दर्य सुख का अनुभव कराता है। लावण्य योजना का अर्थ है किसी पेंटिंग में विभिन्न तत्वों की सामंजस्यपूर्ण योजना बनाना जो देखने वाले के मन को उत्साह से भर दे। आकार, रूप, रंग और बनावट को सही जगह पर रखकर कलाकृतियों में संतुलन, एकता और सामंजस्य पैदा किया जाता है जो कला को अधिक सुंदर बनाता है।

(५) सादृश्य:

सादृश्य का अर्थ है समानता, जो कला में एक ही दृश्य का उल्लेख करके विषय-वस्तु की समानता पर जोर देती है। हुबहू नकल करना सादृश्य नहीं है, बल्कि वास्तविक वस्तु में कलात्मक परिवर्तन करके सार्थक आकृति बनाना है। उदाहरण के लिए गायिका लता मंगेशकर को भारत कोकिला के नाम से जाना जाता है, यानी लता जी की आवाज को कोकिला की तरह मधुर बताकर सादृश्य का भाव दिया जाता है। चित्रकार को पहचान देने में यह पहलू इसलिए भी महत्वपूर्ण है ताकि वह अपनी कलाकृति में आकृति या रूप बनाते समय उसमें अपने स्वभाव और आदतों को भी दर्शाता है।

(६) वर्णिकाभंग :

वर्णिकाभंग चित्रकला में रंगों के उपयोग से संबंधित है। वर्ण का अर्थ है रंग जो चित्रकला में सबसे महत्वपूर्ण है और जिसके बिना कला अधूरी मानी जाती है। रंग जीवन में उत्साह लाते हैं, इसी तरह अलग-अलग रंग कलाकृतियों को

आकर्षक बनाते हैं। रंगों का ज्ञान चित्रकला को स्थायी सुंदरता देता है और विभिन्न रंगों के छाया और प्रकाश द्वारा बनाए गए विभिन्न टोन का उपयोग करके कलाकृति की सुंदरता को बढ़ाने पर जोर देता है।

षडंग का महत्व

प्राचीन भारतीय चित्रकला का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत षडंग है। षडंग कलाकारों को चित्रकला के हर पहलू पर विचार करने के लिए एक व्यापक रूपरेखा प्रदान करता है जिससे कलाकृतियों में सौंदर्य बढ़ जाता है। भारतीय कला रस और भाव पर जोर देकर दर्शकों को भावनात्मक रूप से प्रभावित करती है। चित्रकला में समग्र संतुलन स्थापित करने में उचित प्रमाण तथा सुंदरता लाने में लावण्य इस घटक का योगदान होना अनिवार्य है। विभिन्न स्वरूप एवं दृश्य की समानता चित्रकला में विषय की विशेषता को समृद्ध बनाता है। इन सिद्धांतों का पालन करने से एक समृद्ध और विविध कलात्मक परंपरा विकसित हुई है, जो आज भी कलाकारों को प्रेरणा देती है। मनुष्य में विभिन्न भावनाओं का संचार होते रहता है जिसे चित्रकार सांकेतिक भाषा का प्रयोग करके विविध रूपों तथा रंगों की सहायता से उसे समझाने की कोशिश करता है। इसलिए चित्रकला भी भाषा का रूप है, जो चित्रकार कला के माध्यम से दर्शकों तक अपना संदेश भेज सकता है। भारतीय कला के सिद्धांतों एवं तकनीकों को समझने के लिए छह अंग महत्वपूर्ण है। षडंग हमें भारतीय दार्शनिक और सौंदर्य सिद्धांतों के प्रभाव से भी परिचित कराता है। भारत की विशाल सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मान्यताएं चित्रकला के प्रति समग्र दृष्टिकोण के अनुरूप हैं। षडंग को सौंदर्य का सिद्धांत भी कह सकते है क्योंकि षडंग के छह अंग चित्रकला में सौंदर्य स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। चित्रकार अपनी अलौकिक कलाकृतियां बनाने में एक रूपरेखा बनाते है, जो न केवल देखने में आकर्षित होती हैं, बल्कि भावनात्मक रूप से भी दर्शकों को लुभाती हैं। रूपभेद, प्रमाण, भाव, लावण्य, सादृश्य तथा वर्ण इन सबकी संगत एवं योजना से सौंदर्यपूर्ण कलाकृति का निर्माण करने में षडंग अत्यंत महत्वपूर्ण है।

षडंग का प्राचीन भारतीय कला में प्रमाण

यह षडंग प्राचीन भारतीय चित्रकला में हमेशा महत्वपूर्ण और लोकप्रिय रहा है। आधुनिक चित्रकला पर पश्चिमी प्रभाव के बावजूद इसका महत्व कभी कम नहीं हुआ है। क्योंकि षडंग के छह आवश्यक घटक वास्तव में चित्रकला का आधार है। इसलिए सौंदर्यशास्त्र का अध्ययन करने के लिए इसे जानना महत्वपूर्ण है। षडंग, जिसे चित्रकला के छह अंग भी कहा जाता है, गुप्त काल (४००-६०० ई.) के दौरान उत्पन्न भारतीय चित्रकला में इस षडंग को संदर्भित करता है। अजंता कालीन गुफाओं में भित्ति चित्रण ये षडंग के सिद्धांतों का सटीक उदाहरण प्रस्तुत करता है जिसमें पद्मपानी बोधिसत्व, वज्रपाणि और विश्व प्रसिद्ध चित्र मरणासन्न राजकुमारी जैसी प्रसिद्ध कलाकृतियाँ शामिल है। ये कला के उन तत्वों एवं सिद्धांतों को परिभाषित करता है जो एक सौंदर्यपूर्ण और संतुलित चित्रकारी के लिए आवश्यक है। ये भारतीय चित्रकला के स्तंभ हैं और सौंदर्यशास्त्र और रचनात्मक कलाकृतियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

समकालीन कला

समकालीन का अर्थ है सुविधायुक्त, सरल और नवीनतम वस्तु जो वर्तमान स्थिति से अवगत कराती है। यह एकमात्र कला या वस्तु होकर विषय की विशिष्टता और आधुनिकता को दर्शाती है जिसे पहले नहीं देखा गया। आज कलाकारी में नए नए प्रयोग हो रहे है और ये सफल भी है। जिसे समझना सामान्य व्यक्ति के लिए कठिन है। विशिष्ट शैली, माध्यम, तथा अवधारणा यह कला को समकालीन बनाती है। इसमें कलाकृतियाँ केवल रंग और ब्रश तक सीमित न रहकर आधुनिक तकनीक से साथ नए नए प्रयोग करते रहे है। समकालीन कला किसी शैली, माध्यम या कला आंदोलनों से बंधी नहीं है इसके अपने स्वतंत्र विचार एवं प्रयोग है। यह तेजी से बदलती दुनिया का दर्पण है जो समय की उपयोगिता को स्पष्ट करता है।

समकालीन कला का नाम स्मरण करते ही विभिन्न आधुनिक प्रयोग याद दिलाते है। चित्रकला, मूर्तिकला, प्रदर्शन कला, इंस्टॉलेशन आर्ट, वीडियो आर्ट, डिजिटल आर्ट आदि कलाओं में विभिन्न प्रयोग एवं विभिन्न माध्यमों की सहायता से विशाल श्रृंखला का निर्माण शामिल है। कलाकृतियों में दृश्य प्रस्तुति जितनी महत्वपूर्ण है उतनी ही विषय की अवधारणा होती है, जो कलाकृतियों को सौंदर्य एवं तर्क से बांधे रखती है। आधुनिक तकनीक, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान तथा अन्य विषय के साथ समकालीन कला जुड़ी है। यह कला पारंपरिक विचारधाराओं से परे है, इनके अपने स्वतंत्र विचार होते है जो ये पारंपरिक धारणाओं को चुनौती देकर आधुनिक प्रयोग पर विचार करते है।

समकालीन कला का ज्ञान:

समकालीन कलाकारी को वर्तमान का दर्पण कहकर परिभाषित करना अनुचित नहीं है। क्योंकि यह सुविधापूर्ण एवं समय की उपयोगिता को स्पष्ट करता है। बगैर समझे इसकी प्रशंसा एवं आलोचना करना यह दर्शकों के लिए बहुत बड़ी चुनौती है। समकालीन कला को समझना अत्यंत कठिन है, लेकिन यह इस आधुनिक काल की विकसित आकर्षित कला है।

समकालीन कला को समझने के लिए सर्वप्रथम कलाकार एवं उनकी कलाकृतियों को समझने का प्रयत्न करे। अपरिचित शैली एवं अवधारणाओं का सामना करने के लिए हमेशा तत्पर रहें तथा कलाकृतियों का अवलोकन कर उसे समझने का प्रयत्न करना चाहिए। इसके लिए हमें विविध सेमिनार, कार्यशालाएं एवं कला दीर्घाओं का भ्रमण करना तथा कला पत्रिकाओं को पढ़ते रहना चाहिए। हमारे मस्तिष्क में कलात्मक विचार हलचल करते है उन्हें दूसरों से साझा करें। ताकि एक ठोस निर्णय तक पहुंच सकें। इस तरह समकालीन कला से परिचित होकर इसका ज्ञान अर्जित कर सकते है।

भारतीय चित्रकला के षडंग का समकालीन कला से संबंध

समकालीन समय का तात्पर्य समय की उपयोगिता एवं सुविधापूर्ण वस्तु से है, जिस गति से समय बढ़ते जा रहा है हमारी जरूरतें भी बदलती जा रही है। समय के साथ साथ कलाकृति में भी आधुनिक परीक्षण कर बदलाव आते गए,

जिसे हम समकालीन कला कहते है। कलाकृति का संबंध और रचना हमारे दैनिक जीवन से जुड़ा हुआ है। कलाकृतियों में परिवर्तन तब होता है जब परिस्थितियाँ बदलती है तथा विकास के साथ साथ लोगों का पहनावा, खानपान और पर्यावरण में बदलाव होता है। कलाकृति बनाने के उपकरण, साधन एवं उपयोगी वस्तुएं भी आधुनिक होते रहे है। समकालीन कला में समय की जरूरत को देखते हुए इसमें रोचक तत्व एवं नये नये प्रयोग अनुभव किए जाते है। जब भी भारतीय कला का स्मरण होता है, तब तब इतिहास के पन्नों को हमने पलटकर देखा है फिर वह प्राचीन काल की कला हो, मध्ययुगीन काल की कला या फिर आधुनिक काल की कला हो। यह कलाकृति किसी भी काल की हो या फिर किसी भी प्रकार की क्यू न हो परंतु उसका आधार एवं सिद्धांत मात्र समान ही है। कलाकृतियों में कला के तत्व और सिद्धांत को निश्चित रूप से पालन किया जाता है। कला के तत्व और सिद्धांत के नाम भले ही विश्व के विविध देशों में अलग अलग नाम से पढ़ा जाता है। परंतु उसके तत्व एवं सिद्धांत समान होते है। अतः किसी भी परिस्थितियों में षडंग का समकालीन चित्रकारी का आधार होना निश्चित है।

निष्कर्ष

भारतीय चित्रकला के छह अंग वे स्तंभ हैं जिन से देश की कलात्मक विरासत का निर्माण होता है। वे कलाकृतियां बनाने के लिए एक संरचित दृष्टिकोण प्रदान करते हैं जो देखने में आश्चर्यजनक और भावनात्मक रूप से प्रभावशाली दोनों है। इसलिए गुफा चित्र, लघु चित्र, वास्तविक चित्र, आधुनिक कला, अमूर्त या समकालीन चित्र आदि इन सभी में चित्रकला के षडंग का आधार अत्यधिक महत्वपूर्ण है। कला के तत्वों और सिद्धांतों का उपयोग कलाकृतियों को अधिक संतुलित तथा सौंदर्य प्रदान करता है। प्रागैतिहासिक काल, मध्ययुगीन काल या आधुनिक काल हो, किसी भी काल की कला पर षडंग के सिद्धांतों की परछाई नजर आती है। आधुनिकीकरण, विविध शैलियाँ, पारंपरिक धारणा में भी इसकी भूमिका अहम है जो कलाकृतियों को सौन्दर्यपूर्ण बनाने में निश्चित ही उपयोगी है।

संदर्भ

1. सौंदर्यशास्त्र - डॉ. ममता चतुर्वेदी
2. भारतीय शिल्प के षडंग - अवनींद्रनाथ ठाकुर अनुवादक महादेव
3. कला सौंदर्य और समीक्षाशास्त्र - अशोक
4. https://en.wikipedia.org/wiki/Six_limbs_(Indian_painting)